अव्यक्त पालना का रिटर्न

कानो में अनादि महामंत्र "मनमनाभव" का स्वर गूंजता रहे

1 सदा यह अनुभव करेंगे कि बाप यह महामंत्र बा. र-बार सुनाते हुए स्मृति दिला रहे हैं।

2 चलते-फिरते यही अनहद अर्थात् अविनाशी बोल बाप के सम्मुख सुनने का अनुभव करेंगे और कोई भी आत्माओं के बोल सुनते हुए भी नहीं सुनेंगे।

3 बस 'तुम्हीं से बोलूं, तुम्हीं से सुनूं वा तुम्हारा सुनाया ही बोलूं' - ऐसी स्टेज सदा सुहागिन की ही होती है।

ऐसे सदा सुहागिन संकल्प में भी अन्य आत्मा प्रति एक सेकेण्ड भी स्मृति में नहीं लायेगी अर्थात् संकल्प में भी किसी देहधारी के झुकाव में नहीं आयेगी। लगाव तो बड़ी बात हैं, झुकाव भी नहीं।

28.04.77

प्रश्न हमारे, उत्तर बापदादा के

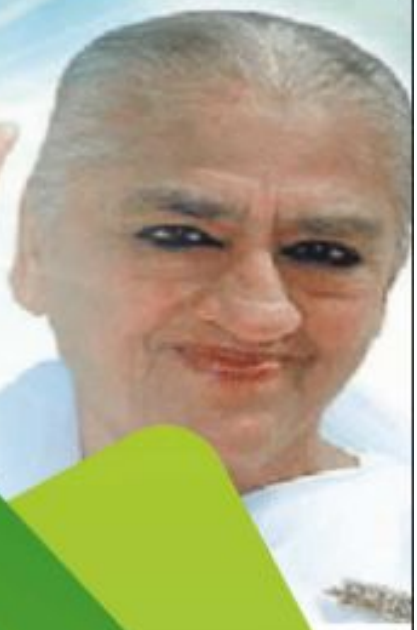

प्रश्न

मीठे बाबा, सदा भाग्यवान की निशानी कौन सी है और उस प्राप्ति का आधार क्या है ?

उत्तर

मीठे बच्चे, सदा भाग्यवान की निशानी है

लाईट का क्राउन।

जैसे लौकिक दुनिया में भाग्य की निशानी राज्य अर्थात् राजाई होती है, और राजाई की निशानी ताज होता है, ऐसे ईश्वरीय भाग्य की निशानी लाईट का क्राउन है। उस ताज की प्राप्ति का आधार है

1. प्यूरिटी (Purity;पवित्रता) और सर्व प्राप्ति।
2. सम्पूर्ण प्यूरिटी अर्थात् मनसा में भी किसी एक विकार का अंश भी न हो। और सर्व प्राप्ति अर्थात् ज्ञान, सर्व गुण और सर्व शक्तियों की प्राप्ति।
3. भाग्य का आधार सर्व प्राप्तियां हैं। सर्व प्राप्तियों की निशानी है 'अविनाशी खुशी।' सदा भाग्यवान सदा खुश होगा।

28.04.77

मन की बात... बापदादा के साथ

मैं आत्मा :-

प्यारे बाबा, बेहद के वैरागी कब बन सकेंगे ?

बापदादा :-

मीठे बच्चे, *बेहद के वैरागी तब बन सकेंगे :-*

☼ जब बाप को ही अपना संसार समझेंगे। बाप ही संसार है तो जब बाप में संसार देखेंगे अनुभव करेंगे तो बाकी रहा ही क्या? आटोमेटिक (स्वत:) वैराग आ जाएगा ना।

☼ बाप ही मेरा संसार है तो संसार में ही रहेंगे; दूसरे में जाएंगे ही नहीं तो किनारा हो जाएगा। संसार में व्यक्ति व वैभव सब आ जाता है तो बाप को ही अपना संसार बनाया है कि आगे कोई संसार है?

☼ कोई सम्बन्ध व कोई सम्पत्ति है क्या? बाप की सम्पत्ति सो अपनी सम्पत्ति। तो इसी स्मृति में रहने से आटोमेटिक बेहद के वैरागी हो जायेंगे।

28.04.77

28-4-77 अव्यक्त वाणी का मुख्य बिंदु

तुम्हारा सुनाया ही बोलूं

सदा सुहागिन के कानों मे

मनमिला भव मनमिला भव मनमिला भव मनमिला भव मनमिला भव

हर घड़ी अनादि महामंत्र का स्वर गुंजता रहे

तुम्हीं से सुनूं
तुम्हीं से बोलूं
तुम्हीं संग रास रचाऊं

सदा सुहागिन संकल्प मे भी अन्य आत्मा प्रति सेकंड भी स्मृति मे नही लायेगी देहधारी के झुकाव मे नही आयेगी लगाव तो बड़ी बात है

झुकाव भी नही

28-04-77 की अव्यक्त वाणी से स्वमान

मैं सदा सुहागिन हूँ।

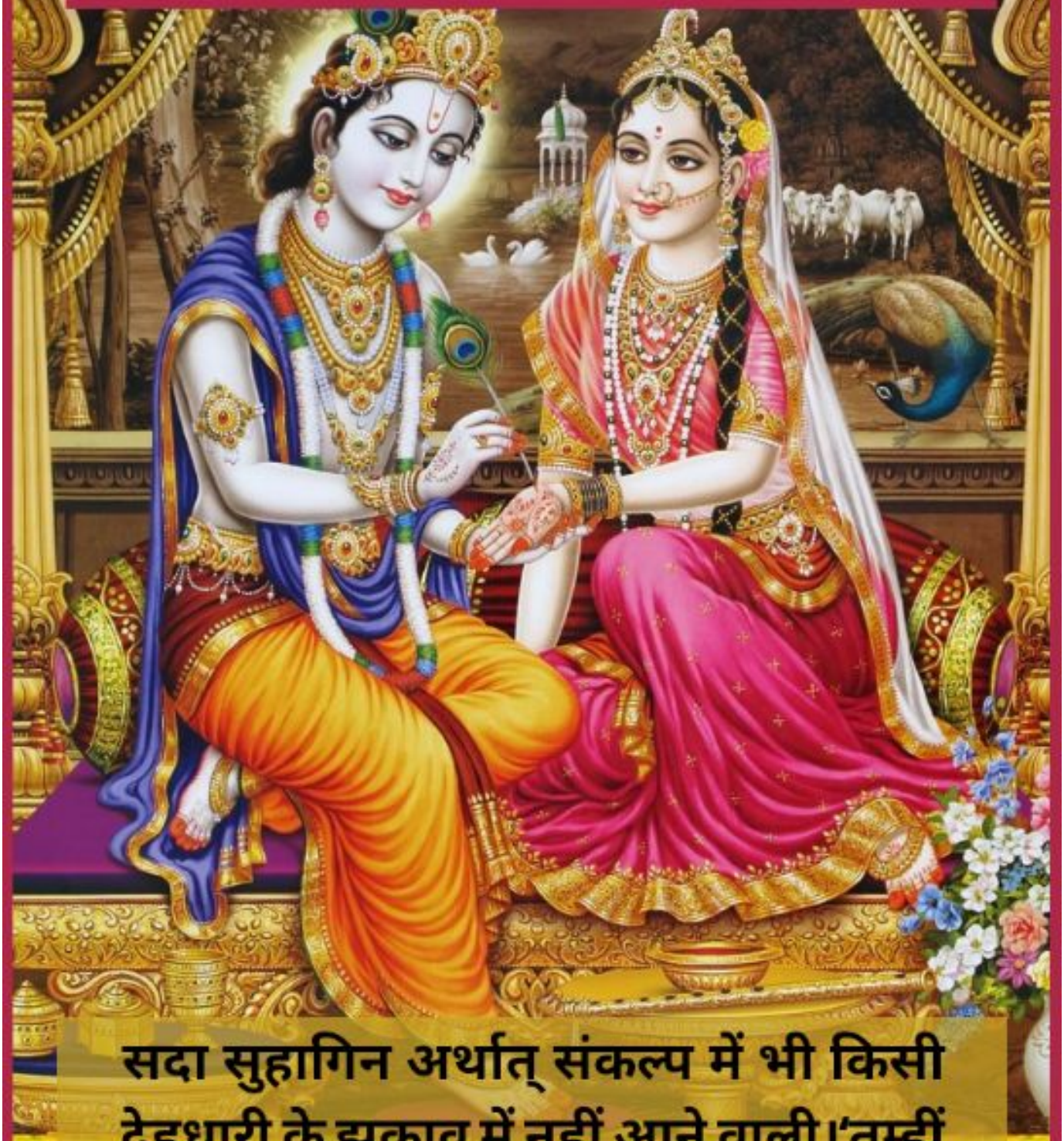

सदा सुहागिन अर्थात् संकल्प में भी किसी देहधारी के झुकाव में नहीं आने वाली।'तुम्हीं से बोलूं, तुम्हीं से सुनूं वा तुम्हारा सुनाया ही बोलूं' - ऐसी स्टेज में रहने वाली।

28-04-77

सदा सुहागिन की निशानियाँ

सर्व प्राप्ति

प्यूरिटी

मैं आत्मा लाइट, बाप की चमकती मणि हूँ

- सदा सुहागिन अर्थात जिनके कानों में अनादि महामन्त्र 'मन्मनाभव' का स्वर गूंजता रहेगा।
- बस 'तुम्हीं से बोलूं, तुम्हीं से सुनूं वा तुम्हारा सुनाया ही बोलूं' - ऐसी स्टेज सदा सुहागिन की ही होती

सम्पूर्ण प्यूरिटी अर्थात मनसा में भी किसी एक विकार का अंश भी न हो। और सर्व प्राप्ति अर्थात् ज्ञान, सर्व गुण और सर्व शक्तियों की प्राप्ति।